STEPPING STONE SCHOOL (HIGH)

***CLASS:10***

***Subject:Hindilanguage***
***Date:24-06-2020***
***Topic:comprehension***
***WorksheetNo.:21***

Please refer to worksheet 19 for general instructions.

*Dothegivencomprehensionin Hindi languagecopy*

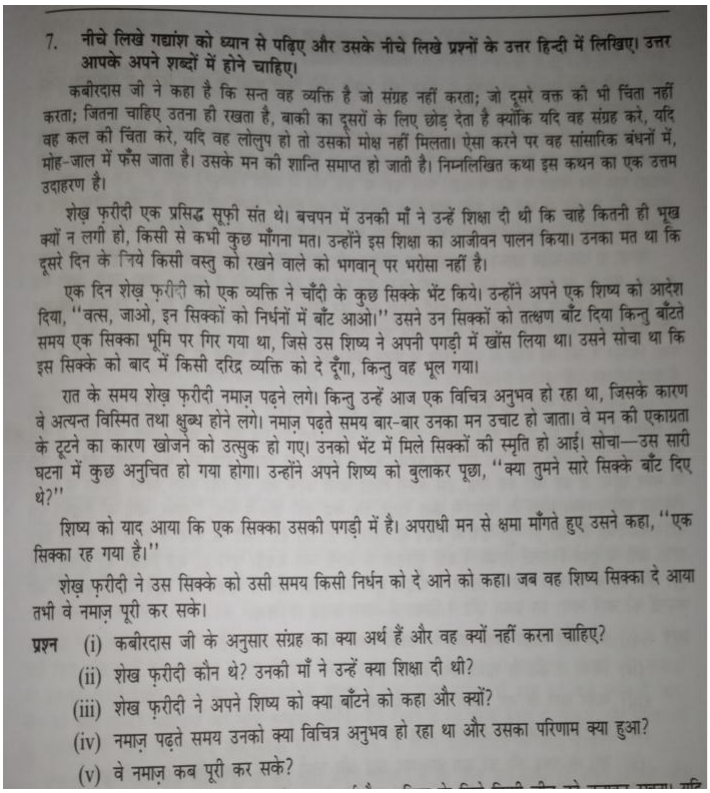

7. **नीचे लिखे गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर आपके अपने शब्दों में होने चाहिए।**

कबीरदास जी ने कहा है कि सन्त वह व्यक्ति है जो संग्रह नहीं करता; जो दूसरे वक्त की भी चिंता नहीं करता; जितना चाहिए उतना ही रखता है, बाकी का दूसरों के लिए छोड़ देता है क्योंकि यदि वह संग्रह करे, यदि वह कल की चिंता करे, यदि वह लोलुप हो तो उसको मोक्ष नहीं मिलता। ऐसा करने पर वह सांसारिक बंधनों में, मोह-जाल में फँस जाता है। उसके मन की शान्ति समाप्त हो जाती है। निम्नलिखित कथा इस कथन का एक उत्तम उदाहरण है।

शेख़ फ़रीदी एक प्रसिद्ध सूफ़ी संत थे। बचपन में उनकी माँ ने उन्हें शिक्षा दी थी कि चाहे कितनी ही भूख क्यों न लगी हो, किसी से कभी कुछ माँगना मत। उन्होंने इस शिक्षा का आजीवन पालन किया। उनका मत था कि दूसरे दिन के लिये किसी वस्तु को रखने वाले को भगवान् पर भरोसा नहीं है।

एक दिन शेख़ फ़रीदी को एक व्यक्ति ने चाँदी के कुछ सिक्के भेंट किये। उन्होंने अपने एक शिष्य को आदेश दिया, "वत्स, जाओ, इन सिक्कों को निर्धनों में बाँट आओ।" उसने उन सिक्कों को तत्क्षण बाँट दिया किन्तु बाँटते समय एक सिक्का भूमि पर गिर गया था, जिसे उस शिष्य ने अपनी पगड़ी में खोंस लिया था। उसने सोचा था कि इस सिक्के को बाद में किसी दरिद्र व्यक्ति को दे दूँगा, किन्तु वह भूल गया।

रात के समय शेख़ फ़रीदी नमाज़ पढ़ने लगे। किन्तु उन्हें आज एक विचित्र अनुभव हो रहा था, जिसके कारण वे अत्यन्त विस्मित तथा क्षुब्ध होने लगे। नमाज़ पढ़ते समय बार-बार उनका मन उचाट हो जाता। वे मन की एकाग्रता के टूटने का कारण खोजने को उत्सुक हो गए। उनको भेंट में मिले सिक्कों की स्मृति हो आई। सोचा—उस सारी घटना में कुछ अनुचित हो गया होगा। उन्होंने अपने शिष्य को बुलाकर पूछा, "क्या तुमने सारे सिक्के बाँट दिए थे?"

शिष्य को याद आया कि एक सिक्का उसकी पगड़ी में है। अपराधी मन से क्षमा माँगते हुए उसने कहा, "एक सिक्का रह गया है।"

शेख़ फ़रीदी ने उस सिक्के को उसी समय किसी निर्धन को दे आने को कहा। जब वह शिष्य सिक्का दे आया तभी वे नमाज़ पूरी कर सके।

**प्रश्न** (i) कबीरदास जी के अनुसार संग्रह का क्या अर्थ हैं और वह क्यों नहीं करना चाहिए?
(ii) शेख फ़रीदी कौन थे? उनकी माँ ने उन्हें क्या शिक्षा दी थी?
(iii) शेख फ़रीदी ने अपने शिष्य को क्या बाँटने को कहा और क्यों?
(iv) नमाज़ पढ़ते समय उनको क्या विचित्र अनुभव हो रहा था और उसका परिणाम क्या हुआ?
(v) वे नमाज़ कब पूरी कर सके?

# *Learntatsumandtatbhavgivenbelow:-*

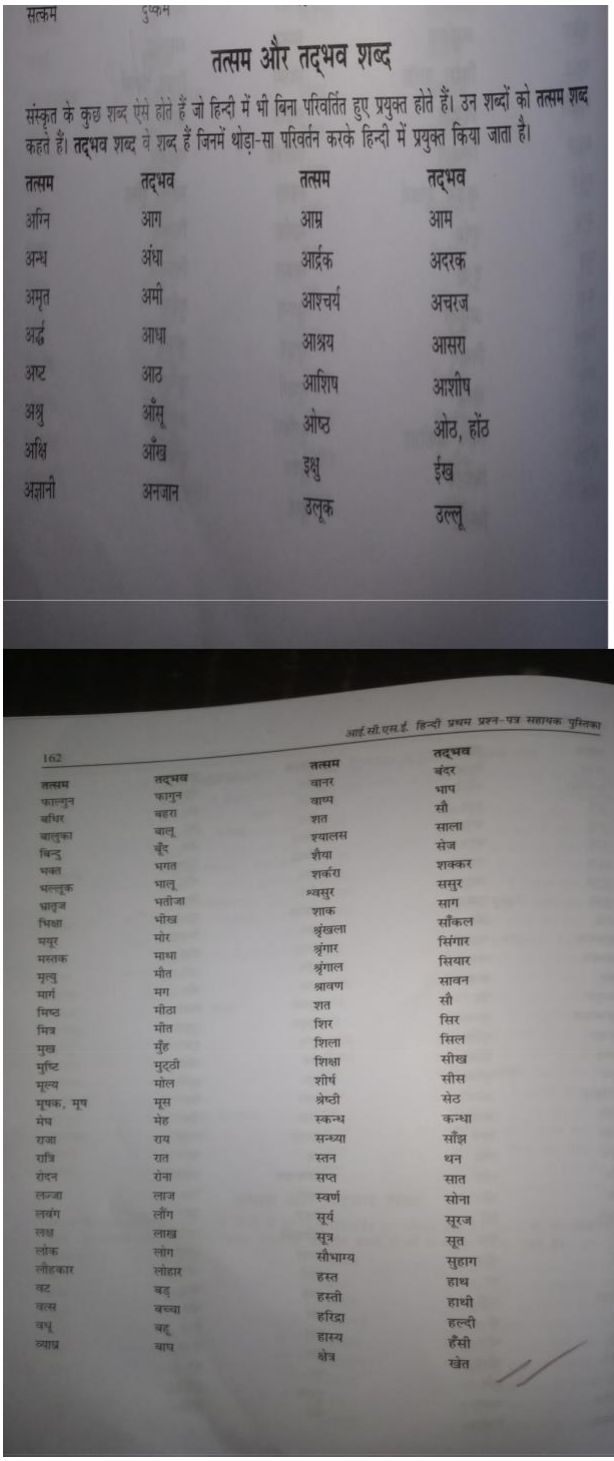

## तत्सम और तद्भव शब्द

संस्कृत के कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो हिन्दी में भी बिना परिवर्तित हुए प्रयुक्त होते हैं। उन शब्दों को **तत्सम शब्द** कहते हैं। **तद्भव शब्द** वे शब्द हैं जिनमें थोड़ा-सा परिवर्तन करके हिन्दी में प्रयुक्त किया जाता है।

| तत्सम | तद्भव | तत्सम | तद्भव |
|---|---|---|---|
| अग्नि | आग | आम्र | आम |
| अन्ध | अंधा | आर्द्रक | अदरक |
| अमृत | अमी | आश्चर्य | अचरज |
| अर्द्ध | आधा | आश्रय | आसरा |
| अष्ट | आठ | आशिष | आशीष |
| अश्रु | आँसू | ओष्ठ | ओठ, होंठ |
| अक्षि | आँख | इक्षु | ईख |
| अज्ञानी | अनजान | उलूक | उल्लू |



| तत्सम | तद्भव | तत्सम | तद्भव |
|---|---|---|---|
| फाल्गुन | फागुन | वानर | बंदर |
| बधिर | बहरा | वाष्प | भाप |
| बालुका | बालू | शत | सौ |
| बिन्दु | बूँद | श्यालस्स | साला |
| भक्त | भगत | शैया | सेज |
| भल्लूक | भालू | शर्करा | शक्कर |
| भ्रातृज | भतीजा | श्वसुर | ससुर |
| भिक्षा | भीख | शाक | साग |
| मयूर | मोर | श्रृंखला | साँकल |
| मस्तक | माथा | श्रृंगार | सिंगार |
| मृत्यु | मौत | श्रृंगाल | सियार |
| मार्ग | मग | श्रावण | सावन |
| मिष्ठ | मीठा | शत | सौ |
| मित्र | मीत | शिर | सिर |
| मुख | मुँह | शिला | सिल |
| मुष्टि | मुट्ठी | शिक्षा | सीख |
| मूल्य | मोल | शीर्ष | सीस |
| मूषक, मूष | मूस | श्रेष्ठी | सेठ |
| मेघ | मेह | स्कन्ध | कन्धा |
| राजा | राय | सन्ध्या | साँझ |
| रात्रि | रात | स्तन | थन |
| रोदन | रोना | सप्त | सात |
| लज्जा | लाज | स्वर्ण | सोना |
| लवंग | लौंग | सूर्य | सूरज |
| लक्ष | लाख | सूत्र | सूत |
| लोक | लोग | सौभाग्य | सुहाग |
| लौहकार | लोहार | हस्त | हाथ |
| वट | बड़ | हस्ती | हाथी |
| वत्स | बच्चा | हरिद्रा | हल्दी |
| वधू | बहू | हास्य | हँसी |
| व्याघ्र | बाघ | क्षेत्र | खेत |

Edit with WPS Office

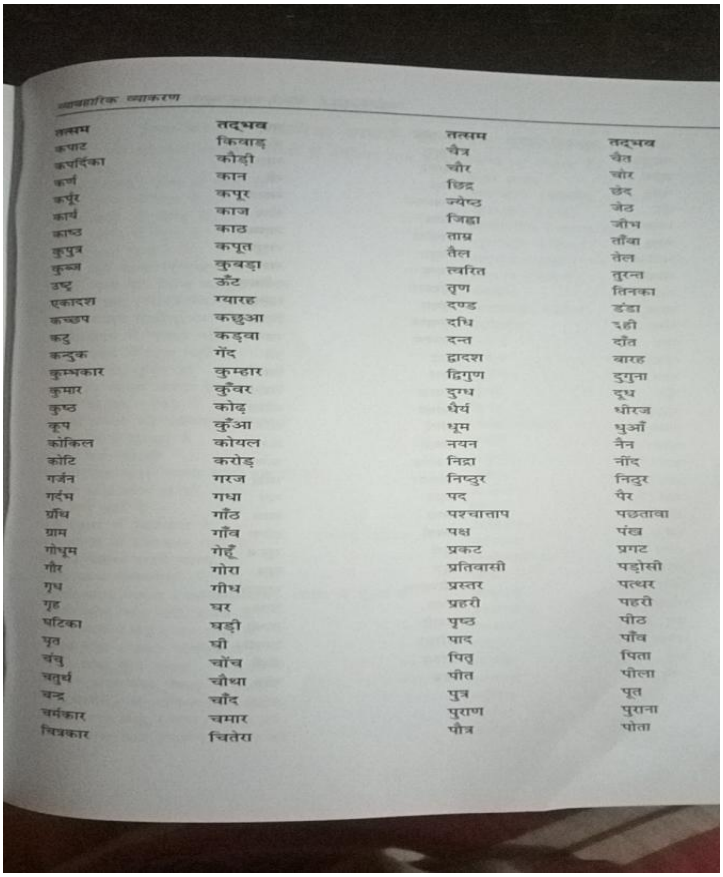

व्यावहारिक व्याकरण

| तत्सम | तद्भव | तत्सम | तद्भव |
|---|---|---|---|
| कपाट | किवाड़ | चैत्र | चैत |
| कपर्दिका | कौड़ी | चौर | चोर |
| कर्ण | कान | छिद्र | छेद |
| कर्पूर | कपूर | ज्येष्ठ | जेठ |
| कार्य | काज | जिह्वा | जीभ |
| काष्ठ | काठ | ताम्र | ताँबा |
| कुपुत्र | कपूत | तैल | तेल |
| कुब्ज | कुबड़ा | त्वरित | तुरन्त |
| उष्ट्र | ऊँट | तृण | तिनका |
| एकादश | ग्यारह | दण्ड | डंडा |
| कच्छप | कछुआ | दधि | दही |
| कटु | कड़वा | दन्त | दाँत |
| कन्दुक | गेंद | द्वादश | बारह |
| कुम्भकार | कुम्हार | द्विगुण | दुगुना |
| कुमार | कुँवर | दुग्ध | दूध |
| कुष्ठ | कोढ़ | धैर्य | धीरज |
| कूप | कुँआ | धूम | धुआँ |
| कोकिल | कोयल | नयन | नैन |
| कोटि | करोड़ | निद्रा | नींद |
| गर्जन | गरज | निष्ठुर | निठुर |
| गर्दभ | गधा | पद | पैर |
| ग्रंथि | गाँठ | पश्चाताप | पछतावा |
| ग्राम | गाँव | पक्ष | पंख |
| गोधूम | गेहूँ | प्रकट | प्रगट |
| गौर | गोरा | प्रतिवासी | पड़ोसी |
| गृध | गीध | प्रस्तर | पत्थर |
| गृह | घर | प्रहरी | पहरी |
| घटिका | घड़ी | पृष्ठ | पीठ |
| घृत | घी | पाद | पाँव |
| चंचु | चोंच | पितृ | पिता |
| चतुर्थ | चौथा | पीत | पीला |
| चन्द्र | चाँद | पुत्र | पूत |
| चर्मकार | चमार | पुराण | पुराना |
| चित्रकार | चितेरा | पौत्र | पोता |

# *Learnsynonymousgivenbelow(learntwo wordsforeach)*

Edit with WPS Office

33. कर्म—कार्य, कर्तव्य, काज, कृत्य, कृति, काम।
34. कृपा—अनुग्रह, उपकार, भला, प्रसाद।
35. कान्ति—छवि, शोभा, सुषमा, चमक, द्युति, सुन्दरता, तेज, सौन्दर्य।
36. कारण—बीज, हेतु, निमित्त, वजह, सबब, जड़, मूल।
37. किनारा—कूल, कगार, तीर, तट।
38. किरण—रश्मि, मयूख, मरीचि, अंशु, कर।
39. क्रोध—गुस्सा, कोप, रोष, क्षोभ, अमर्ष।
40. कौशल—कुशलता, निपुणता, प्रवीणता, पारंगतता, दक्षता।
41. क्रंदन—रोना, विलाप, रोदन, चीख़-पुकार।
42. क्षति—हानि, नुकसान, अहित, नाश।
43. गंगा—देवनदी, सुरसरिता, भागीरथी, मन्दाकिनी, सुखदी, विष्णुपदी।
44. गणेश—गजानन, विनायक, गणपति, मोददाता, गौरीसुत, लम्बोदर, विघ्ननाशक, वक्रतुंडकाय, विघ्नेश्वर, सिद्धेश्वर।
45. गृह—घर, निकेतन, सदन, भवन, आलय, आगार, धाम।
46. गहना—आभूषण, अलंकार, आभरण, भूषण, ज़ेवर।
47. ग्राम—गाँव, देहात।
48. गाय—गैया, गो, गऊ, धेनु, सुरभी।
49. घोर—भयंकर, भयावह, भयकारी, भयानक।
50. घूस—उत्कोच, रिश्वत, नज़राना, दस्तूरी।
51. घृणा—नफ़रत, घिन, ग्लानि, जुगुप्सा।
52. घोंपना—घुसाना, चुभाना, धँसाना।
53. घोंसला—नीड़, आशियाना।
54. घायल—आहत, क्षत, जख्मी।
55. चतुर—प्रवीण, दक्ष, विज्ञ, निपुण, कुशल, योग्य, समर्थ, पटु, सयाना, होशियार।
56. चन्द्र—चाँद, चन्द्रमा, सोम, शशि, मयंक, निशापति, हिमांशु, सुधांशु, राकेश, शशांक, रजनीश।
57. चाँदनी—चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी।
58. चोर—दस्यु, तस्कर, स्तेन, रजनीचर।
59. चंचल—चपल, अस्थिर, नटखट।
60. चिन्ता— फ़िक्र, सोच, विचार।
61. छल—छद्म, कपट, ठगी, धोखा।
62. जल—वारि, नीर, सलिल, तोय, पानी, पय, अमृत।
63. जन्म—उद्भव, उत्पत्ति, आविर्भाव, उद्गम।
64. झगड़ा—कलह, लड़ाई, विवाद, युद्ध।
65. झण्डा—ध्वज, पताका, केतु, निशान।
66. ठहाका—कहकहा, अट्टहास, उन्मुक्त हास।

## पर्यायवाची या समानार्थ शब्द (Synonyms)

ऐसे दो या दो से अधिक शब्दों को जिनका अर्थ समान हो, 'पर्यायवाची' शब्द कहते हैं।

1. अंग—अवयव, भाग, हिस्सा, अंश।
2. अग्नि—आग, अनल, पावक, कृशानु, हुताशन, दहन।
3. अनोखा—अपूर्व, अद्वितीय, अनुपम, अद्भुत।
4. अध्यापक—शिक्षक, गुरु, प्राध्यापक, आचार्य
5. अधम—पापी, दुष्ट, दुर्जन, तमस, नीच।
6. अन्धकार—अंधेरा, तम, तिमिर।
7. अतिथि—पाहुना, मेहमान, अभ्यागत।
8. अन्तस्—हृदय, अन्तर, उर, दिल, मर्मस्थल।
9. अपराध—ग़लती, जुर्म, दुष्कृत्य, गुनाह।
10. अबोध—नादान, मासूम, भोला, अपरिपक्व।
11. अहंकार—घमंड, दर्प, अभिमान, मद, गर्व।
12. अवधि—काल, समय, निर्धारित काल, मियाद, सीमित काल।
13. असुर—दानव, राक्षस, दैत्य, रजनीचर, निशाचर, दनुज।
14. अश्व—घोड़ा, तुरंग, हय, वाजि, सैन्धव, घोटक।
15. अमृत—सुधा, पीयूष, अमिय।
16. आँखें—नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, दृग, अक्षि।
17. आकाश—अम्बर, व्योम, नभ, गगन, अन्तरिक्ष, रव, आसमान।
18. आचरण—आचार, व्यवहार, चलन, तौर-तरीका, रंगढंग।
19. आदेश—आज्ञा, निर्देश, हुक्म, आज्ञप्ति।
20. आशा—उम्मीद, आस, प्रत्याशा, शुभ संभावना, मुराद।
21. आश्चर्य—हैरानी, अचरज, विस्मय, ताज्जुब, अचंभा।
22. आनन्द—हर्ष, उल्लास, मोद, आमोद, प्रमोद, आह्लाद, खुशी।
23. इच्छा—अभिलाषा, आकांक्षा, चाह, कामना, मनोरथ, लालसा, वांछा, उत्कंठा, स्पृहा।
24. इन्द्र—सुरपति, शचिपति, महेन्द्र, देवराज, मेघवाहन, पुरन्दर।
25. ईश्वर—प्रभु, परमात्मा, भगवान, परमेश्वर, विधाता, खुदा, ईश, अल्लाह।
26. उन्नति—उत्कर्ष, प्रगति, विकास, आरोहण, उत्थान, अभ्युदय।
27. उत्तम—श्रेष्ठ, उच्च, उत्कृष्ट।
28. उदासीन—विरक्त, निष्पक्ष, तटस्थ।
29. उद्देश्य—ध्येय, लक्ष्य, अभीष्ट, इरादा, मकसद, हेतु, मतलब।
30. ऋण—कर्ज, उधार, उधारी, कर्जा, देय।
31. कटु—तिक्त, कड़वा, अप्रिय।
32. कमल—सरोज, नीरज, जलज, पंकज, सरसिज, वारिज, अम्बुज, अरविन्द, पद्म, उत्पल, कंज, नलिन।

Edit with WPS Office

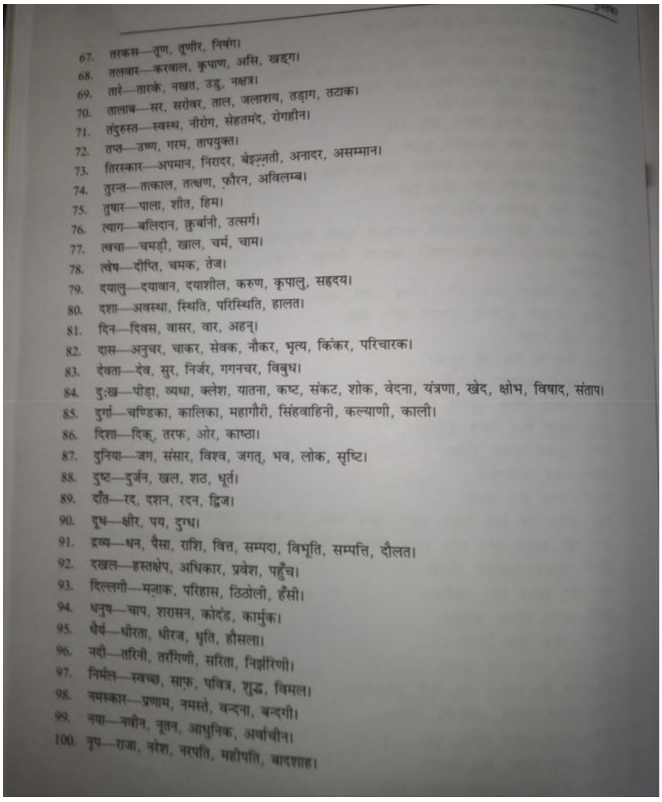

67. तरकस—तूण, तूणीर, निषंग।
68. तलवार—करवाल, कृपाण, असि, खड्ग।
69. तारे—तारके, नखत, उडु, नक्षत्र।
70. तालाब—सर, सरोवर, ताल, जलाशय, तड़ाग, तटाक।
71. तंदुरुस्त—स्वस्थ, नीरोग, सेहतमंद, रोगहीन।
72. तप्त—उष्ण, गरम, तापयुक्त।
73. तिरस्कार—अपमान, निरादर, बेइज़्ज़ती, अनादर, असम्मान।
74. तुरन्त—तत्काल, तत्क्षण, फ़ौरन, अविलम्ब।
75. तुषार—पाला, शीत, हिम।
76. त्याग—बलिदान, क़ुर्बानी, उत्सर्ग।
77. त्वचा—चमड़ी, खाल, चर्म, चाम।
78. त्वेष—दीप्ति, चमक, तेज।
79. दयालु—दयावान, दयाशील, करुण, कृपालु, सहृदय।
80. दशा—अवस्था, स्थिति, परिस्थिति, हालत।
81. दिन—दिवस, वासर, वार, अहन्।
82. दास—अनुचर, चाकर, सेवक, नौकर, भृत्य, किंकर, परिचारक।
83. देवता—देव, सुर, निर्जर, गगनचर, विबुध।
84. दुःख—पीड़ा, व्यथा, क्लेश, यातना, कष्ट, संकट, शोक, वेदना, यंत्रणा, खेद, क्षोभ, विषाद, संताप।
85. दुर्गा—चण्डिका, कालिका, महागौरी, सिंहवाहिनी, कल्याणी, काली।
86. दिशा—दिक्, तरफ़, ओर, काष्ठा।
87. दुनिया—जग, संसार, विश्व, जगत्, भव, लोक, सृष्टि।
88. दुष्ट—दुर्जन, खल, शठ, धूर्त।
89. दाँत—रद, दशन, रदन, द्विज।
90. दुध—क्षीर, पय, दुग्ध।
91. द्रव्य—धन, पैसा, राशि, वित्त, सम्पदा, विभूति, सम्पत्ति, दौलत।
92. दखल—हस्तक्षेप, अधिकार, प्रवेश, पहुँच।
93. दिल्लगी—मज़ाक, परिहास, ठिठोली, हँसी।
94. धनुष—चाप, शरासन, कोदंड, कार्मुक।
95. धैर्य—धीरता, धीरज, धृति, हौसला।
96. नदी—तरिनी, तरंगिणी, सरिता, निर्झरिणी।
97. निर्मल—स्वच्छ, साफ़, पवित्र, शुद्ध, विमल।
98. नमस्कार—प्रणाम, नमस्ते, वन्दना, बन्दगी।
99. नया—नवीन, नूतन, आधुनिक, अर्वाचीन।
100. नृप—राजा, नरेश, नरपति, महीपति, बादशाह।

Edit with WPS Office